देहली 7

दुनिया ने अपना पता बदल लिया।

कुछ लोगों के जीवन में एक क्षण आता है जब भूगोल नक्शा होना बंद कर देता है और एक अनुभव बन जाता है।

उस दिन तक दुनिया किताबों में मौजूद रहती है।

तस्वीरों में।

दूसरों की कहानियों में।

समाचारों में।

फिर, अचानक, वह एक खबर होना बंद कर देती है और चलने के लिए एक रास्ता बन जाती है।

मेरे लिए यह धीरे-धीरे हुआ।

कोई खास सुबह नहीं थी।

कोई महाकाव्य जैसा बुलावा नहीं था।

कोई ऐसी घोषणा नहीं थी जो जीवन को एक पहले और एक बाद में बाँट सके।

बस एक दरवाज़ा था जो खुल गया।

और उस दरवाज़े के पीछे दुनिया थी।

जब तुम उस जगह को छोड़ते हो जहाँ तुम बड़े हुए, तो पहली चीज़ जो तुम खोते हो वह यह भ्रम है कि तुम्हारे जीने का तरीका ही जीने का स्वाभाविक तरीका है।

यह एक स्वास्थ्यकर आघात है।

उस क्षण तक तुम मानते हो कि जो कुछ तुमने अपने आसपास देखा है वही सामान्यता है।

फिर तुम कहीं और पहुँचते हो।

और तुम पाते हो कि दूसरी सामान्यताएँ भी हैं।

दूसरी लय।

दूसरे मूल्य।

दूसरे डर।

दूसरी उम्मीदें।

और सब में तुम्हारी जितनी ही गरिमा है।

शुरू में मैं देखता था।

सुनता था।

समझने की कोशिश करता था।

हर देश उसी मानवीय कहानी का एक अलग रूप सुनाता प्रतीत होता था।

भाषाएँ बदलती थीं।

चेहरे बदलते थे।

आदतें बदलती थीं।

पर सवाल हैरान कर देने वाली हद तक एक जैसे रहते थे।

परिवार कैसे बनाया जाता है?

सम्मान कैसे पाया जाता है?

जिससे प्रेम करते हैं उसकी रक्षा कैसे की जाती है?

भविष्य का सामना कैसे किया जाता है?

हर बार सवाल केवल लहजे में अलग होता था।

कभी सार में नहीं।

मुझे वह विस्मय याद है जो मैं उन शहरों में घुसते हुए महसूस करता था जो एक दिन पहले तक केवल कागज़ पर मौजूद थे।

हवाई अड्डे।

स्टेशन।

होटल।

बैठक कक्ष।

रेस्तराँ।

सड़कें।

गुमनाम जगहें जो मेरे जीवन के अध्याय बन जाती थीं।

बहुत से लोग सोचते हैं कि यात्रा करने का मतलब है जगह बदलना।

यह सच नहीं है।

यात्रा करने का मतलब है नज़रिया बदलना।

तुम एक पूरा महाद्वीप पार कर सकते हो और कुछ न सीखो।

या तुम केवल एक सड़क पार कर सकते हो और बदल कर बाहर निकलो।

यह उन आँखों पर निर्भर करता है जिनसे तुम देखते हो।

सालों तक मैंने सोचा कि मैं ही दुनिया को देख रहा हूँ।

फिर मैंने पाया कि दुनिया मुझे देख रही थी।

हर संस्कृति एक दर्पण की तरह काम करती है।

वह तुम्हें तुम्हारे होने की एक अलग छवि लौटाती है।

कुछ देशों में मैंने धैर्य सीखा।

दूसरों में अनुकूलनशीलता।

और कुछ में अनुशासन।

हर जगह मुझे एक ऐसा सबक सौंपती थी जिसे सीखना है, यह मुझे पता ही नहीं था।

और हर बार वह मेरे भीतर कुछ ऐसा छोड़ जाती थी जो पहले मौजूद नहीं था।

जब लंबे समय तक विदेश में रहते हैं तो एक अजीब बात होती है।

"घर" शब्द का अर्थ बदल जाता है।

वह अब किसी पते से मेल नहीं खाता।

वह अब किसी शहर से मेल नहीं खाता।

कभी-कभी वह किसी देश से भी मेल नहीं खाता।

वह कुछ अधिक गतिशील बन जाता है।

अधिक गहरा।

परिभाषित करना अधिक कठिन।

घर वह बन जाता है जिसे तुम अपने साथ ले जा सको।

सिद्धांत।

यादें।

वे लोग जिनसे तुम प्रेम करते हो।

वे कहानियाँ जिन्हें तुम सुनाते रहते हो।

बाकी सब बदल सकता है।

मैं अलग-अलग देशों में इतना लंबा रहा हूँ कि एक सरल सच्चाई समझ सकूँ।

मनुष्य जिससे डरते हैं उससे कहीं अधिक मिलते-जुलते हैं।

वे भुला दिए जाने से डरते हैं।

वे उन्हें खोने से डरते हैं जिनसे प्रेम करते हैं।

वे असफल होने से डरते हैं।

वे पीड़ा से डरते हैं।

वे समय से डरते हैं।

इन्हीं सार्वभौमिक डरों पर हमारे अस्तित्व का बड़ा हिस्सा खड़ा होता है।

और ठीक वहीं सबसे प्रामाणिक जुड़ाव भी जन्म लेते हैं।

मतभेदों में नहीं।

साझा कमज़ोरियों में।

हर बार जब मैं देश बदलता था, कुछ छोड़ जाता था।

दोस्त।

आदतें।

निश्चितताएँ।

हर बार कुछ और पाता था।

नए नज़रिये।

नए रिश्ते।

नए सवाल।

अंतिम हिसाब कभी आर्थिक नहीं होता था।

वह मानवीय होता था।

जैसे-जैसे साल बीतते गए मैं उतना ही समझता गया कि अंतरराष्ट्रीय अनुभव पासपोर्ट पर मुहरें जमा करने में नहीं है।

वह भीतरी सीमाओं को विस्तृत करने में है।

कम कठोर बनने में।

अपनी निश्चितताओं के बारे में कम आश्वस्त।

अधिक जिज्ञासु।

सुनने के लिए अधिक तैयार।

दुनिया अक्सर उसे पुरस्कृत करती है जो बोलता है।

जीवन, इसके विपरीत, उसे पुरस्कृत करता है जो सुनना जानता है।

और अलग-अलग संस्कृतियों को सुनना शिक्षा के सबसे प्रभावी रूपों में से एक है।

एक समय पर मैंने देश गिनना बंद कर दिया।

मैंने उड़ानें गिनना बंद कर दिया।

मैंने तय किए गए मील गिनना बंद कर दिया।

मैंने समझा कि सबसे महत्वपूर्ण दूरी भौगोलिक नहीं थी।

वह मानसिक थी।

वह दूरी जो पूर्वाग्रह को समझ से अलग करती है।

अज्ञान को ज्ञान से।

डर को भरोसे से।

हर अनुभव मुझे उसे घटाने में मदद करता था।

यहाँ तक कि मुझे कुछ ऐसा समझा दिया जिसकी मैंने कल्पना नहीं की थी।

दुनिया केवल मेरे आसपास नहीं बदल रही थी।

वह मेरे भीतर बदल रही थी।

जो व्यक्ति सालों पहले निकला था वह अब मौजूद नहीं था।

उसकी जगह कोई ऐसा था जिसने चीज़ों को अलग-अलग कोणों से देखना सीख लिया था।

कोई जिसे सही होने में कम और समझने में अधिक रुचि थी।

कोई जो मतभेदों से कम आकर्षित और समानताओं के प्रति अधिक सजग था।

आख़िर में मैंने समझा कि सबसे बड़ा बदलाव एक राष्ट्र से दूसरे राष्ट्र में जाना नहीं था।

वह एक संकीर्ण दृष्टि से एक व्यापक दृष्टि में जाना था।

मानो मेरा भीतरी पता बदल गया हो।

हमेशा के लिए।

इसीलिए यह देहली देशों की बात नहीं करती।

वह नक्शों की बात नहीं करती।

वह सरहदों की बात नहीं करती।

वह रूपांतरण की बात करती है।

क्योंकि एक क्षण आता है जब दुनिया केवल भूगोल नहीं बदलती।

वह अर्थ बदलती है।

और जब ऐसा होता है, तो तुम नहीं रहते जो दुनिया को खोजता है।

यह दुनिया है जो तुम्हारे भीतर जीने लगती है।

दुनिया ने अपना पता बदल लिया था।

और नया पता मैं था।